ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न त्वावाँ असि देवता विदानः। ऋग्वेद 1/165/9
हे प्रभो! आपके तुल्य न कोई पूज्य है न कोई विद्वान है।
O Lord ! there is none who is more adorable than You nor is anyone more learned than You.

वर्ष 36, अंक 47 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 अक्तूबर, 2013 से रविवार 3 नवम्बर, 2013
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

एक दीपक बुझ गया लाखों दीपक जलाकर

प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक व्यक्तित्व होता है जिसके कारण वह अन्य मनुष्यों से अलग पहचाना जाता है। वही उसकी पहचान कहलाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिनकी चिन्तनधारा में हमें जीवन के समस्त पहलुओं पर सटीक और स्पष्ट निर्देश मिलते हैं। उनकी विचारधारा में जो सार्वदेशिकता दिखाई देती है और जो समय की परिधि में नहीं बांधी जा सकती, वह इस चिन्तनधारा को और अधिक उत्कृष्टता प्रदान करती है।

महर्षि ने केवल एक ही दिशा में कार्य नहीं किया अपितु सभी क्षेत्रों में अपनी दृष्टि डाली। उन्होंने जहाँ एक ओर धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई, वहीं दूसरी ओर वेदों का पुनरुद्धार भी किया। ऋषि दयानन्द ने वेदमन्त्रों के जैसे राष्ट्रपरक अर्थ किए हैं,उससे कहा जा सकता है कि वे राष्ट्रभक्त और वेदभक्त साथ—साथ हुए। उनका राष्ट्रप्रेम उनके धर्म का अंग रहा।

महर्षि दयानन्द प्रमुख रूप से एक धार्मिक पुरुष थे। परन्तु उन्होंने धर्म की जो व्याख्या की है वह किसी मनुष्य द्वारा स्थापित मत या सम्प्रदाय का वाचक न होकर मानव की सर्वांगीण उन्नति में सहायक उन गुणों का नाम है जिनके कारण सच्ची मानवता का विकास होता है। उनके कथनानुसार धर्म वह है जो सत्य से युक्त है, न्याय की भावना से ओतप्रोत है और जो पक्षपात से रहित है। उनकी दृष्टि में धर्म किन्हीं बाह्य कर्मकाण्डों का पुंज नहीं है अपितु धैर्य, क्षमा, इन्द्रिय संयम, सत्य आदि मानवीय गुण ही हमे सच्चा धार्मिक बताते हैं। धर्म की परिभाषा में *'वसुधैव कुटुम्बकम्'* के आदर्श को जोड़ा है। इसके साथ ही धर्म और सत्य को एक दूसरे का पर्यायवाचक भी कहा। सत्य पर बहुत बल देते हुए कहा 'असत्य का सम्भाषण और समर्थन करना मेरे लिए असंभव है। सत्य मेरा बनाया हुआ नहीं है, वह सनातन है और ईश्वर का है। उस सत्य को यथावत् प्रकट करने में मैं किसी से, किंचित्मात्र भी भयभीत नहीं होता।'

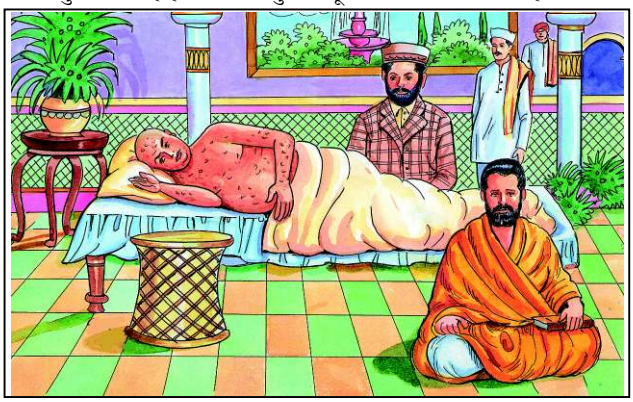

महर्षि दयानन्द सरस्वती जिनके दर्शन मात्र से नास्तिक आस्तिक हो गए

स्वामीजी का मुख्य कार्य समाज में व्याप्त पाखण्ड को नष्ट करके सत्य अर्थ का प्रकाश करना था, जिसके लिए वे जीवन भर लगे रहे। इसके लिए उन्होंनें प्रचार के क्षेत्र को अपनाया। घूम-घूमकर अवैदिक मान्यताओं के विरूद्ध प्रचार किया। धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करके निरंकार सर्वव्यापक ईश्वर के सिद्धान्त को अपना मूलभूत मन्तव्य प्रतिपादित किया। इस मत का प्रचार करने में महर्षि ने अपना सारा जीवन लगा दिया। उनका कथन था कि प्रतिमा को ईश्वर मानने से वह

– शेष पृष्ठ 5 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के अन्तर्गत
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा आर्यसमाज सैनिक विहार के सहयोग से संचालित
शान्तिदेवी आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, दिल्ली के
नव निर्मित भवन का उद्घाटन समारोह
रविवार 10 नवम्बर, 2013 तद्नुसार कार्तिक शुक्ल 10 विक्रमी 2070
यज्ञ : प्रातः 9 बजे ★ भजन: प्रातः 11 बजे ★उद्घाटन समारोह : प्रातः 11:30 बजे
आशीर्वाद : स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती एवं डॉ. महेश विद्यालंकार जी
अध्यक्षता : महाशय धर्मपाल जी ★भवन प्रवेश : श्री दीनदयाल गुप्त जी ★ स्वागताध्यक्ष : श्री रामकृष्ण तनेजा जी
विशिष्ट अतिथि : ब्र. राजसिंह आर्य जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री मनोज आनन्द जी एवं श्री शकुन गोयल जी
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं और आदिवासी कन्याओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करें

निवेदक

सुनील गुप्ता, प्रधान, आर्यसमाज सैनिक विहार
सुरेन्द्र आर्य, प्रधान, वेद प्र. मंडल उ.पश्चिम दिल्ली
धर्मपाल गुप्ता, व. उप प्रधान
माता प्रेमलता शास्त्री, महामन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
जोगेद्र खट्टर, प्रभारी दिल्ली
विनय आर्य, महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वेद-स्वाध्याय

सुखों की वर्षा करने वाले

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञिया वृषणो देवा वृषणो हविष्कृतः। वृषणा द्यावापृथिवी ऋतावरी वृषा पर्जन्यो वृषणो वृषस्तुभः।। ऋग्वेद 10/66/6

अर्थ—**(यज्ञः वृषा)** यज्ञरूप परमात्मा सुख वर्षक हो **(यज्ञिया वृषणः सन्तु)** उसके उपासक सुखदायी होवे **(वृषणः देवाः)** विद्वान् सुखप्रद उपदेश करें **(हविष्कृतः वृषणः)** दानी लोग सुख देने वाले हों **(ऋतावरी द्यावापृथिवी वृषणा)** जलों वाली द्यु और पृथिवी सुखों की वर्षा करने वाली हों **(पर्जन्य वृषा)** पर्जन्य के समान पुत्र सुख देने वाला हो और **(वृषस्तुभः वृषणः)** सब सुखों के देने वाले परमात्मा की स्तुति करने वाले भी सुख देने वाले होंवे।

सुख की इच्छा सभी करते हैं। जो इन्द्रियों को हितकर है उसे सुख और जिससे आहत हो प्राणी उससे बचना चाहता है वह दुःख है। मनुष्य जिस पर्यावरण और समाज में रहता है, वह यदि उसके अनुकूल है तो सर्वत्र सुख का वातावरण बन जाता है अन्यथा न चाहते हुये भी प्रतिकूल परिस्थितियों में रहना मरने के कष्ट से भी अधिक दुःखदायी सिद्ध होता है।

बाह्य वातावरण के अतिरिक्त व्यक्ति के अपने विचार, दिनचर्या और आर्थिक स्थिति भी उसे प्रभावित करती है। सुख-दुःख का यह चक्र चलता ही रहता है।

न नित्यं लभते दुःखं न नित्यं लभते सुखम्। सुखदुःखे मनुष्याणां चक्रवत् परिवर्तते॥ महा०शा० १७४.१९-२०॥

किसी को सदा सुख या दुःख प्राप्त नहीं होता। मनुष्यों के सुख-दुःख चक्र के समान घूमते रहते हैं। जो सुखी रहना चाहे वह इन उपायों को करे—

सर्वसाम्यमनायासः सत्यवाक्यं च भारत। निर्वेदश्चाविधित्सा च यस्य स्यात् स सुखी नरः॥महा०शा० १७७.२॥

सब में समता का भाव, व्यर्थ परिश्रम न करना, सत्यभाषण, संसार से वैराग्य और कर्मों में अनासक्ति ये पाँचों जिसमें होते हैं, वह मनुष्य सुखी रहता है। लोक में कहावत है—'सन्तोषी सदा सुखी'।

मन्त्र में कामना की गई है कि निम्न पदार्थ हमारे लिये सुखों की वर्षा करें। इनका सम्बन्ध पर्यावरण से है।

१. वृषा यज्ञः यज्ञ हमारे लिये सुखों की वर्षा करने वाला हो। 'शतपथ ब्राह्मण' में कहा है—**स्वर्गकामो यजेत** स्वर्ग अर्थात् सुख की विशेष इच्छा करने वाला यज्ञ करे। यज्ञ की अग्नि से धूम और उससे बादल बन कर वृष्टि होती है। यज्ञ से वायु एवं जल की शुद्धि होती है। शुद्ध जल, वायु से शुद्ध अन्न और शुद्ध अन्न के सेवन से शुद्ध मन का निर्माण हो व्यक्ति शुभ कर्मों को करता है, जिसका फल है सुख की प्राप्ति। इसलिये ऋषियों का यह कहना युक्तियुक्त ही है। गीता कहती है—

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥ गीता ३.१०॥

प्रजापति ब्रह्मा ने सृष्टि के आदि में यज्ञादि करने का ज्ञान वेद के माध्यम से देते हुये कहा कि हे मनुष्यो! तुम इन वेदोक्त यज्ञों द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ। ये यज्ञ तुम्हारी कामनाओं की पूर्ति करने वाले होवें। यज्ञों द्वारा तृप्त हुये देव तुम्हें इष्ट भोगों को देने वाले होंगे। इन देवों को बिना दिये जो खाता है वह चोर ही है।

२. वृषणः सन्तु यज्ञियाः यज्ञादि उत्तम कर्म करने वाले ऋत्विक् हमारे लिये सुखकारी होवें। जो यज्ञ बिना विधि-विधान वेदमन्त्रों के उच्चारण किये बिना और श्रद्धा भाव के बिना और ऋत्विजों को दक्षिणा दिये बिना किया जाता है। वह निष्फल होता है इसलिये यज्ञ में ऋत्विक् उन्हें बनाया जाये जो सब कर्मकाण्ड के पूर्ण ज्ञाता हों और जिस कामना के लिये यजमान ने यज्ञ कराया है, वह पूर्ण होने की मन से कामना करें तथा जिनकी उस यज्ञ को करने में श्रद्धा भी हो, ऐसे ऋत्विजों का चयन किया जाना चाहिये और उन्हें मान-सम्मान, दक्षिणादि से सत्कृत करना चाहिये।

३. वृषणो देवाः—यज्ञ में पधारे विद्वान् हमारा मार्गदर्शन कर सुख के साधन क्या हैं, इसका उपदेश करें। ब्रह्मा का यह दायित्व बनता है कि वह यज्ञ को ठीक पद्धति से कराये और जिस कर्मकाण्ड का अनुष्ठान किया जाता है, उसका रहस्य क्या है और इसका जीवन से क्या सम्बन्ध है, इत्यादि बातों को सरल पद्धति से यजमान एवं उपस्थित जनता को समझाये जिससे लोगों में यज्ञ के प्रति आस्था बने।

४. वृषणः हविष्कृतः—यज्ञादि उत्तम, जनहित के कार्यों में दान देने वाले लोग भी परोपकार की भावना से ही दान दें, अपनी प्रसिद्धि या किसी स्वार्थ पूर्ति के लिये दिया गया दान यज्ञिय भावना का विनाशक है। निष्काम भाव से किया गया कर्म ही यज्ञ कहा जाता है। **इदं न मम** में भी यही भाव है कि जो उत्तम कर्म या आहुति मैं यज्ञ में दे रहा हूँ वह सभी के लिये हितकारी हो।

५. वृषणा द्यावापृथिवी ऋतावरी—द्युलोक और भूमि अन्न-जल द्वारा सुखों की वर्षा करे। यज्ञ से सूर्य तत्त्व की वृद्धि हो उससे बादल बनते और वर्षा होती है। पर्यावरण की शुद्धि होने से भूमि शुद्ध अन्न, औषधि, वनस्पतियों को उत्पन्न करती है। यज्ञ से पर्यावरण भी सन्तुलित बना रहता है।

६. वृषा पर्जन्यः 'इच्छानुसार बरसे पर्जन्य ताप धोवें' यह प्रार्थना हम नित्य करते हैं। यज्ञ से **निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु** समय-समय पर बादल इच्छानुसार वृष्टि करते रहें जिससे पशु-पक्षी और मनुष्यादि सभी की पुष्टि होवे। स्मरण रहे—आजकल पर्यावरण के प्रदूषित हो जाने से तेजाबी वर्षा अनेक स्थानों पर हो रही है जिसके कारण औषधि-वनस्पतियों का विनाश हो भूमिगत जल भी प्रदूषित हो रहा है।

७. वृषणः वृषस्तुभः सब सुखों की वर्षा करने वाले परमात्मा की जो स्तुति करते हैं, वे भी हमारे लिये सुखकारी हों। वे हमें सन्मार्ग का उपदेश करें। जिस यज्ञ का अनुष्ठान हम कर रहे हैं उसका आध्यात्मिक रहस्य क्या है यह समझायें। क्योंकि यज्ञ का अन्तिम लक्ष्य यज्ञ के स्वामी परमात्मा को जान लेना ही है। यज्ञ के द्वारा हम यज्ञरूप प्रभु का ही स्तवन कर रहे हैं। यज्ञ में स्वयं यज्ञपति विराजमान हो रहा है इन सदुपदेशों द्वारा हमें सुखी बनायें। - *क्रमशः*

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्यसमाज शाहबाद मोहम्मदपुर द्वारा एकत्र

748	सर्वश्री रतनसिंह गौड़	2100
749	चन्द्रमोहन सिंह (अंकित)	101
750	फूले सिंह स्वामी	101
751	माताजी, श्री राधे सैनी	11
752	श्रीमती कर्मवीरो	100
753	श्रीमती ओमवती	251
754	जीतराम सैनी	200
755	सुशान्त सैनी/राजेन्द्र सैनी	200
756	ईश्वर सिंह	50
757	श्रीमती निर्मला देवी	101
758	श्रीमती सरोज देवी	101
759	श्रीमती सुनीतो वी	101
760	नेत्रपाल सोलंकी	1100
761	राजकुमार गहलौत	500
762	जसमेर दलाल	1100
763	राजवीर गांव, मदानी गांव	100
764	राजू ठाकुर	551
765	रामफल दहिया	500
766	अनूप पांचाल	1100
767	सत्संग मंडली	1100
768	नवीन लाम्बा/बलजीत सिंह	21
769	रामानन्द	
770	आजाद पांचाल	200
771	श्रीमती कृष्णा देवी	21
772	महेन्द्र सोलंकी	1100
773	रवीन्द्र सैनी	500
774	श्रीमती बालादेवी सोलंकी	201
775	श्रीमती भतेरी बाल्मीकि	50
776	श्रीमती मुकेश पांचाल	100
777	उमेद लाम्बा	500
778	श्रीमती सुरजो देवी	100
779	बलजीत सोलंकी	500
780	रामकरण सोलंकी	101
781	श्रीमती प्रेम सोलंकी	101
782	श्रीमती सीमा दलाल	101
783	महावीर आर्य	501

- क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। - *महामन्त्री*

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

हास्य-व्यंग्यात्मक लेख

जुगाड़ एक अदद पी.एच.डी. का

– डॉ. पूर्णसिंह डबास

एक पुरानी कहावत है कि 'जिन खोजा तिन पाइया' अर्थात् जिसने खोजा उसने पाया। मतलब यह कि कुछ पाने के लिए खोज करना जरूरी है। यही वजह है कि मेरे चारों तरफ जो आवरण है, जिसे आप जैसे बुद्धिमान लोग वात-आवरण या वातावरण कहते हैं, उसमें खोज का बोल-बाला है। ऊपर-नीचे, आगे-पीछे सब तरफ खोज हो रही है। कोई आकाश में कुछ खोज रहा है तो कोई धरती को टटोल रहा है। कोई पहाड़ों के ऊपर खोज कर रहा है तो कोई सागरों में डुबकी लगा रहा है और कोई बियाबानों की खाक छान रहा है। कोई गुरु खोज रहा है, कोई चेला खोज रहा है, कोई अपनी भागी हुई बीवी खोज रहा है और कोई सिर-फिरा अपने भीतर ही कुछ खोज रहा है। अनेक उत्साही किताबों में ही कुछ खोजने में जुटे हुए हैं। हालांकि किताबें साफ-साफ लिखी हुई हैं, छपी हुई हैं और उन्हें आसानी से पढ़ा जा सकता है इसके बावजूद उन में कुछ खोजा जा रहा है। इस किताब-खोज का आलम तो यह है कि इस पावन भारत भूमि का सिर्फ एक विश्वविद्यालय संत कवि तुलसीदास के साहित्य पर खोज करवाकर पीएच. डी. की अस्सी डिग्रियाँ न्यौछावर कर चुका है और खोज है कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही। यह 'पीएच. डी.' किस किस्म की 'डी' होती है यह तो मुझे ठीक से पता नहीं लेकिन जो इसे हासिल कर लेता है, चलते समय उसका सीना चौड़ा हो जाता है और वह अपने नाम से पहले 'डाक्टर' लगाने का अधिकारी बन जाता है।

हम कहाँ भटक गए! आइए फिर से अपने खोज वाले विषय पर लौटते हैं। तो बंधुओ! हालांकि इस काल को विद्वानों ने बेशक आधुनिक काल, जेटॅकाल, परमाणु काल या भ्रष्टाचार काल जैसे तरह-तरह के नामों से विभूषित कर रखा है लेकिन ऊपर के विवरण के आधार पर मुझे लगता है कि इसका सर्वश्रेष्ठ नाम 'खोजकाल' है। खोज के इस महत्त्व से प्रभावित होकर अनेक खोजी खोज अभियान में जुटे हुए हैं। नतीजा यह है कि हर फील्ड में खोज हो रही है। मेरे एक मित्र राजनीति उद्योग में चले गए। वे वहाँ कई साल तक खोज करते रहे जिसका सुखद परिणाम यह निकला कि नोटों से भरे चार-पाँच सूटकेस खोज लाए। मेरे पास मित्रों की कोई कमी नहीं है इसीलिए मेरे एक और मित्र थे जो आलू पर खोज कर रहे थे। कई साल की सफल खोज के बाद जब मुझसे मिलने आए तो उनके चेहरे पर गजब की चमक थी। अपनी खोज का सार प्रस्तुत करते हुए बोले:-'आलू की खोज के लिए मुझे गाँव में जाना पड़ा क्योंकि आलू गाँव में ही उगते हैं। यह हमारा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि इतना मॉडर्न जमाना होने के बावजूद हमारे आलू शहरों में उगना नहीं सीख सके हैं। इन सब अड़चनों के बावजूद मेरी खोज पूरी हो गई है। मैंने आलुओं के इस रहस्य का पता लगा लिया है कि वे जमीन के भीतर दबे होते हैं। एक खेत में जाकर मैंने खुरपी से खुद जमीन खोदी तो नीचे से आलू निकले। मेरी खोज पर मुझे जल्दी ही पीएच. डी. की डिग्री मिलने वाली है।' जब वे मुझे यह सुखद समाचार सुना रहे थे तो खुशी के मारे उनका मुँह इतना खुल चुका था कि उनमें एक पूरा आलू समा जाए।

ऐसे खोजियों से प्रेरणा पाकर मेरे मन में दबी **डाक्टरैषणा** उभर आई। हालांकि मैं खुद भी काफी खोजी किस्म का जीव रहा हूँ। इस का प्रमाण यह है कि जब भी घर में कोई चीज़ गुम हो जाती थी तो घर वाले मुझ से ही उसकी खोज करवाते थे। मेरी यह खोज-कला इतनी विकसित हो गई थी कि दूर-दूर के घरों से, रात के घुप अंधेरे में भी चीजें खोज लाता था। लेकिन अब उम्र ऐसी हो चली थी कि थोड़ा-सा जोर डालते ही मेरी खोज-बुद्धि टें बोल जाती थी। इस सिलसिले में मैं उस घटना को नहीं भूल सकता जब मैं एक दवाई देने वाले डाक्टर के पास बैठा था। डाक्टर पुराने सिर-दर्द के एक रोगी से सवाल-जवाब कर रहा था ताकि वह उस के सिर-दर्द का कारण जान सके। जब कुछ नहीं पता चला सका तो डाक्टर ने आखिरी सवाल पूछा :'आप बहुत दिमागी काम तो नहीं करते?' रोगी ने 'हाँ' में उत्तर देते हुए कहा कि वह नीबू का अचार बनाने वाली फैक्टरी में काम करता है। यह सुनकर डाक्टर को वही हुआ जिसे आश्चर्य कहते हैं और रोगी से फिर सवाल किया : वहाँ आप क्या करते हैं?

–नीबुओं की छँटाई करके उनकी तीन ढेरियाँ बनाता हूँ: छोटे नीबू, मध्यम आकार के नीबू और बड़े नीबू।

डाक्टर थोड़ी तेज आवाज में बोला-'तो इसमें दिमाग पर जोर पड़ने की कौन-सी बात है?

–रोगी ने बड़े धैर्य से कहा : 'सर आप समझते क्यों नही! मुझे हर नीबू के साथ एक फैसला लेना पड़ता है।'

रोगी का उत्तर सुनकर डाक्टर के साथ-साथ मेरे भी कान खुल गए और मैंने भी फैसला ले किया कि इस उम्र में खोज जैसा दिमागी काम करके सिर-दर्द को बिल्कुल न्यौता नहीं दूंगा।

लेकिन पीएच. डी. का जुगाड़ तो करना ही था। डाक्टरी-एषणा ने मन में धमाचौकड़ी मचा रखी थी। इस विषय में कई शुभ चिंतकों से बात की कि वे मेरे लिए कहीं से सिर्फ एक अदद पीएच. डी. का जुगाड़ करवा दें। एक शुभचिंतक ने कहा : 'एक नई-नई यूनिवर्सिटी डेढ़ लाख रुपये लेकर पीएच. डी. की डिग्री अर्पित कर रही है। थीसिस के नाम पर जो कुछ थोड़ा बहुत लिखना पड़ेगा उसकी जिम्मेदारी खुद गाइड संभालेगा। बात करवाने की इच्छा तो बड़ी प्रबल थी लेकिन डेढ़ लाख रुपये की मांग ने उसी तरह धराशायी कर दिया जैसे दहेज-लोभी बहू को धराशायी कर देते हैं। पर मैंने भी हिम्मत नहीं हारी। कई रसूख वाले लोगों से निवेदन किया कि किसी यूनिवर्सिटी से एक ऑनरेरी (मानद) पीएच. डी. ही दिलवा दें। वे बोले : यूनिवर्सिटी को आपसे ज्यादा अपनी प्रतिष्ठा प्यारी है। आप जैसी हैसियत को ऑनरेरी डिग्री देने के बाद यूनिवर्सिटी कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रह जाएगी।

कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। मन आक्रोश से भर रहा था। लानत है ऐसे देश पर जो एक भले आदमी के लिए एक पीएच. डी. का इंतजाम नहीं कर सकता। लेकिन इस सबके बावजूद मैंने पीएच. डी. की खोज का अभियान जारी रखा। मेरी पीड़ा पर संवेदना का मरहम लगाते हुए एक कृपालु ने रास्ता सुझाया। तुम अमुक 'महाराज' के पास चले जाओ। वे अवश्य ही तुम्हारे कष्ट का निवारण कर देंगे। मैंने शंका प्रकट की तो वे डपट कर बोले उनके लिए सब संभव है। जब वे बिना राज्य के 'महाराज' हो सकते हैं तो तुम्हें पीएच. डी. का दान उनके बाएँ हाथ का काम हैं।

मैं महाराज की संस्था में पहुँच गया। वे परमहंस थे। और मैं तो कहना चाहूंगा कि अगर परम हंस से भी बड़ा कोई हंस होता हो तो वे उसी तरह के हंस थे। बिल्कुल सॉलिड किस्म के महाराज। दाढ़ी, मूँछ, सिर के बाल सब सफाचट। पूरी तरह घुटे हुए। मौका लगते ही मैंने महाराज के उन श्री चरणों का स्पर्श किया, जो इतने छूए गए थे कि ऊपर की तरफ की नीचे से भी ज्यादा ठोस हो गए थे। मेरी इच्छा थी कि महाराज की चरण धूलि से अपने मस्तक को पवित्र कर लूँ लेकिन ऐसा नहीं हो सका। महाराज साफ-सुथरे कार्पेट पर बैठे थे इसलिए चरणों पर से धूलि नदारद थी। जो थोड़ी बहुत रही भी होगी तो उसे वह कार्पेट जज्ब कर चुका था। खैर मैंने चरण सेवा शुरू कर दी। उन श्री चरणों को पुष्ट और संतुष्ट करने में काफी समय लग गया। लगता था कि वे कई साल से सेवा का अकाल झेल रहे थे। खैर, जब मुझे उन परमहंसी चरणों की पुष्टि, तुष्टि और तरावट का पूरा भरोसा हो गया तो मैंने अत्यंत नम्रता से भी ज्यादा नम्रता से निवेदन किया : महाराज अब तो इस सेवक का भी कल्याण कर दो। मुझे लिखना-पढ़ना तो कुछ ज्यादा आता नही'। मेरा धर्म तो सिर्फ सेवा है। इसी को मेरी पूंजी मानकर आशीर्वाद स्वरूप मुझे एक अदद पीएच. डी. प्रदान कर दो। मेरा सम्मान बढ़ जाएगा और आपका मान रह जाएगा। परमहंस पसीजते दिखाई दिए क्योंकि उनकी दोनों भुजाएँ ऊपर की तरफ उठकर हंस के पंखों की तरह फड़फड़ाई। उन्होंने तथास्तु कहा और मुझे एक अदद पीएच. डी. का दान दे दिया। मैं पीएच. डी. हूँ। इसका मतलब है कि मेरे नाम के पहले **डाक्टर** शब्द जुड़ गया है। अपने सिकुड़े से सीने को फुलाकर गर्व पूर्वक चलने लगा हूँ। लोग मेरी तरफ उत्सुकता से देखते हैं कि देखो

– शेष पृष्ठ 6 पर

लेखक परिचय : डॉ. पूर्ण सिंह डबास, आर्यसमाज साकेत नई दिल्ली के प्रधान हैं तथा समाज मं व्याप्त समस्याओं का व्यंग्य के रूप में समाधान प्रस्तुत करते हैं।

..... वे वहाँ कई साल तक खोज करते रहे जिसका सुखद परिणाम यह निकला कि नोटों से भरे चार-पाँच सूटकेस खोज लाए। मेरे पास मित्रों की कोई कमी नहीं है इसीलिए मेरे एक और मित्र थे जो आलू पर खोज कर रहे थे। कई साल की सफल खोज के बाद जब मुझसे मिलने आए तो उनके चेहरे पर गजब की चमक थी। अपनी खोज का सार प्रस्तुत करते हुए बोले:-'आलू की खोज के लिए मुझे गाँव में जाना पड़ा क्योंकि आलू गाँव में ही उगते हैं। यह हमारा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि इतना मॉडर्न जमाना होने के बावजूद हमारे आलू शहरों में उगना नहीं सीख सके हैं। इन सब अड़चनों के बावजूद मेरी खोज पूरी हो गई है। मैंने आलुओं के इस रहस्य का पता लगा लिया है कि वे जमीन के भीतर दबे होते हैं। एक खेत में जाकर मैंने खुरपी से खुद जमीन खोदी तो नीचे से आलू निकले। मेरी खोज पर मुझे जल्दी ही पीएच. डी. की डिग्री मिलने वाली है।' जब वे मुझे यह सुखद समाचार सुना रहे थे तो खुशी के मारे उनका मुँह इतना खुल चुका था कि उनमें एक पूरा आलू समा जाए। .....

..... खैर, जब मुझे उन परमहंसी चरणों की पुष्टि, तुष्टि और तरावट का पूरा भरोसा हो गया तो मैंने अत्यंत नम्रता से भी ज्यादा नम्रता से निवेदन किया : महाराज अब तो इस सेवक का भी कल्याण कर दो। मुझे लिखना-पढ़ना तो कुछ ज्यादा आता नही'। मेरा धर्म तो सिर्फ सेवा है। इसी को मेरी पूंजी मानकर आशीर्वाद स्वरूप मुझे एक अदद पीएच. डी. प्रदान कर दो। मेरा सम्मान बढ़ जाएगा और आपका मान रह जाएगा। परमहंस पसीजते दिखाई दिए क्योंकि उनकी दोनों भुजाएँ ऊपर की तरफ उठकर हंस के पंखों की तरह फड़फड़ाई। उन्होंने तथास्तु कहा और मुझे एक अदद पीएच. डी. का दान दे दिया। .....

वैदिक साहित्य में विश्वकर्मा का स्थान – विश्वकर्मा पूजा

वैदिक वाङ्मय में विश्वकर्मा शब्द का व्यापक अर्थ है। यह शब्द गुणवाचक है व्यक्तिवाचक नहीं। अतः शब्द से किसी निश्चित विश्वकर्मा का ज्ञान न होकर अनेक विश्वकर्माओं का ज्ञान होता है। तद्यथा-सृष्टि रचयिता परमपिता परमात्मा, शिल्पशास्त्र के अविष्कर्त्ता व सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता ऐतिहासिक महापुरुष विश्वकर्मा तथा सूर्य, वायु, अग्नि, पृथ्वी व वाणी आदि जड़ चेतन रूप से अनेक विश्वकर्मा हैं।

विश्वकर्मा वेद का शब्द है। यह वेद से लेकर ही लोक में प्रयुक्त हुआ। हमें दशरथनन्दन राम, योगिराज कृष्ण व शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा आदि महापुरुषों का मानवीय इतिहास ऐतिहासिक ग्रंथों में ही ढूंढ़ना चाहिए वेद में नहीं।

वेद के विश्वकर्मा शब्द से ज्ञान परमपिता परमात्मा, उसके द्वारा सूर्य, वायु, अग्नि आदि विश्वकर्मा व ऐतिहासिक महापुरुष शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा ये समस्त ही विश्वकर्मा हमारे जिज्ञास्य हैं, हम इन्हें जानने का समुचित प्रयत्न करें। निरूक्तकार महर्षि यास्क विश्वकर्मा शब्द का यौगिक अर्थ लिखते हैं। ''**विश्वानि कर्माणि येन यस्य वा स विश्वकर्मा** अथवा **विश्वेषु कर्म यस्य वा स विश्वकर्मा, विश्वकर्मा सर्वस्य कर्ता**'' जगत के सम्पूर्ण कर्म जिसके द्वारा सम्पन्न होते हैं अथवा सम्पूर्ण जगत में जिसका कर्म है वह सब जगत् का कर्ता विश्वकर्मा है। विश्वकर्मा शब्द के इस यथार्थ अर्थ के आधार पर विविध कला कौशल के आविष्कार यद्यपि अनेक विश्व कर्मा सिद्ध हो सकते हैं। तथापि सर्वाधार सर्वकर्ता परमपिता परमात्मा ही सर्व प्रथम विश्वकर्मा है। ऐतरेय ब्राह्मणग्रन्थ के मतानुसार 'प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा विश्वकर्माऽभवत्' प्रजापति परमेश्वर प्रजा को उत्पन्न करने से सर्वप्रथम विश्वकर्मा है। वेद में परमेश्वर के विश्वकर्तृत्व अद्भुत व मनोरम चित्रण विश्वकर्मा नाम लेकर अनेक स्थानों पर किया गया है। सृष्टि का मुख्य निमित्त कारण परमात्मा ही है। वही सब सृष्टि को प्रकृति से बनाता है, जीवात्मा नहीं। इस कारण सर्वप्रथम विश्वकर्मा परमेश्वर है। परमेश्वर ने जगत् को बनाने की सामग्री प्रकृति से सृष्टि की रचना की है एतद्विषयक निम्नलिखित मंत्र द्रष्टव्य है।

किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्कथासीत् । यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षा। ऋ.१०/८१/२

अर्थात् जगत को उत्पन्न करने में कौनसा अधिष्ठान था। इसे आरम्भ करने का कौनसा मूल उपदानकारण जगत को बनाने की सामग्री थी कि जिससे विश्वकर्मा परमेश्वर ने भूमि और द्यौलोक को अत्यंत कौशल से उत्पन्न किया। सर्वद्रष्टा परमेश्वर ही अपने महान् ज्ञानमय सामर्थ्य से प्रकृति को गति देकर विकसित करके सृष्टि की रचना करता हैं उसके विश्वकर्मात्व को देखकर बड़े-बड़े विद्वान आश्चर्य करते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी परमेश्वर की सृष्टि रचना का वर्णन सत्यार्थ प्रकाश से निम्नलिखित शब्दों में करते हैं- "**देखो! शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बंधन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन प्लीहा, यकृत, फेफड़े, पंखा कला का स्थापन, जीव का संयोजन शिरोरूप मूल रचना, लोम नखादि स्थापन, आँख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जागृत, स्वप्न, सुषुप्ती अवस्था के भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला, कौशल स्थापनादि अद्भुत सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है? इसके बिना नाना प्रकार के रत्नधातु से जड़ित भूमि, विविध प्रकार वटवृक्ष आदि के बीजों में अतिसूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत, कृष्ण चित्र मध्य रूपों युक्त पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कन्दमूलादि रचना अनेकानेक क्रोड़ों भूगोल, सूर्य चन्द्रादि लोक निर्माण, धारण, भ्रमण नियमों से रखना आदि परमेश्वर के बिना कोई भी नहीं कर सकता।**" इस प्रकार वेद व सृष्टि की रचना का अद्भुत सामर्थ्य केवल परमेश्वर का है। इसलिए सर्व प्रथम विश्वकर्मा वही है। परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म स्वभाव होने से उसके विश्वकर्मा नाम की भांति सच्चिदानन्द निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्ता आदि अनन्त नाम हैं किन्तु उसका मुख्य नाम 'ओ३म्' है, यह ध्यान रखना चाहिए।

विश्वकर्मा परमेश्वर ने जगत में अनेक पदार्थ रचे हैं। उन पदार्थों में परमेश्वर ने जितने-जितने दिव्यगुण स्थापित किये हैं उतने-उतने ही दिव्यगुण हैं, न उससे अधिक और न न्यून। उन दिव्यगुणों के द्वारा विश्व में अपना-अपना कर्म करने से अग्नि, सूर्य आदि जड़ पदार्थ भी विश्वकर्मा कहलाते हैं। शतपथ ब्राह्मणग्रन्थ में '**विश्वकर्मायमग्निः**' वाक्य से अग्नि को विश्वकर्मा कहा है। गोपथ में '**असौ वै विश्वकर्मा योऽसौ सूर्यः तपति**' कहकर विश्व को प्रकाशित करने के कर्म से सूर्य को विश्वकर्मा कहा है। वैदिक साहित्य में इसी प्रकार से वायु, पृथ्वी व वाणी आदि तीनों लोकों के अनेक वैदिक पदार्थों को विश्वकर्मा शब्द से व्यक्त किया गया है। हमें इन पदार्थों के दिव्य विश्वकर्मत्व को जानकर विद्या, विज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए। सृष्टि के आरम्भकाल में मनुष्य के पास नामकरण के कोश के रूप में केवल वेद थे। जिस प्रकार परमेश्वर ने सृष्टि के पदार्थों का नामकरण वेदों से ही शब्द लेकर किये हैं। महर्षि मनु जी का भी यही मन्तव्य है। इसी प्रकार का एक नाम प्राचीन इतिहास में विश्वकर्मा भी है। प्रतीत होता है कि अद्भुत कला कौशल्य के व्यवस्थापक विश्वकर्मा जी राजा इक्ष्वाकु के समय में हुए थे। इसका दिग्दर्शन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अपने इतिहास विषयक आठवें पूना प्रवचन के निम्न शब्दों से होता है। ''स्वायम्भुव मनु का पुत्र मरीचि यह प्रथम क्षत्रिय राजा हुआ। इसके पश्चात् हिमालय के प्रदेश में छः क्षत्रिय राजाओं की परम्परा हुई। अनन्तर इक्ष्वाकु राजा राज्य करने लगा। कला कौशल्य की व्यवस्था करने वाला विश्वकर्मा नामक एक पुरुष हुआ। विश्वकर्मा परमेश्वर का भी नाम है और एक शिल्पकार का भी था। अस्तु, विश्वकर्मा ने विमान की युक्ति निकाली। फिर विमान में बैठकर आर्य लोग इधर-उधर भ्रमण करने लगे। मानव जाति के पूज्य शिल्प प्रजापति विश्वकर्मा जी शिल्पशास्त्र के अविष्कर्ता व ज्ञाता थे। भारत के वास्तु कला के ज्ञाता, शिल्प कला के विद्वान, पण्डित, इन्जीनियर आदि उन्हें अपना आदर्श व शिल्प विद्याजगत में अपना आदि पुरुष मानते हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से सत्य है। वे विमान आदि की नियुक्ति निकाल कर शिल्पविद्या के प्रथम आविष्कारक बने। प्रतीत होता है कि तदनन्तर विश्वकर्मा शब्द उपाधि के रूप प्रयुक्त होने लगा। जो नवीन-नवीन शिल्पविद्याओं के आविष्कारक महान् विद्वान विशेष दक्ष होते थे, वे विश्वकर्मा पदवी को धारण करते थे। लंका का निर्माण व पांडवों का सभागार विश्वकर्मारचित हैं, किन्तु समय की दूरी से निश्चित ही ये विश्वकर्मा पृथक्-पृथक हैं। जिन भुवनपुत्र मंत्रद्रष्टा ऋषि ने विश्वकर्मा विषयक मंत्रों का दर्शन करने पर अपना नाम भी तदनुरूप विश्वकर्मा भौवनः रख लिया वे मंत्रदृष्टा ऋषि विश्वकर्मा, ऐतिहासिक शिल्पी विश्वकर्मा जी से पृथक् हैं। इस प्रकार सृष्टि रचयिता परमात्मा, उसके द्वारा रचित सूर्य आदि वैदिक पदार्थ व ऐतिहासिक शिल्पी विश्वकर्मा को पृथक्-पृथक् समझते हुए शिल्पी विश्वकर्मा से शिल्प कौशल से शिक्षा लेकर विद्वानों को जगत में शिल्पविद्या की वृद्धि करना चाहिए।

- आचार्य रामज्ञानी आर्य
मन्त्री, जिला आर्य सभा देवरिया
लार चौक, लार-देवरिया (उ.प्र.)

जापान ने भी मानी भारतीय गाय की महत्ता

अल्लाह के नाम पर गाय काटने वाले कब मानेगे या भारत की उपजाऊ भूमि को अरब का रेगिस्तान बनाकर ही छोड़ेंगे। जापान के हिरोशिमा और नागासाकी यहाँ परमाणु हथियारों के कारण तबाही हुई थी, की भूमि को उपजाऊ करने के लिए भारतीय नस्ल की गौओं का प्रयोग हो रहा है। जापान ने उस भूमि को उपजाऊ करने के लिए कितने ही प्रयोग किये लेकिन सफलता नही मिली लेकिन भारतीय नस्ल की गौओं के मूत्र, गोबर और दही से तैयार खाद से वहां बेहतर परिणाम सामने आ रहे हैं ।

ऐसे ही हमारे शास्त्रों में गाय को माता की संज्ञा नहीं दी गयी। लेकिन बार्बिक और झूठे मजहबों को मानने वालों को इतने उपयोगी जीव की महत्ता का पता नहीं है और इसे मार काट रहे हैं और मानवता की बहुत हानि कर रहे है। (पंजाब केसरी)

प्रथम पृष्ठ का शेष

एक दीपक बुझ गया...

सच्चिदानन्द और अखण्ड कैसे सिद्ध हो सकता है।

महर्षि दयानन्द का दूसरा क्षेत्र सामाजिक क्षेत्र में क्रान्ति लाना था। हमारा समाज उन दिनों अनेक प्रकार की कुरीतियों से जकड़ा हुआ था। जहां एक ओर बाल विवाह, सती प्रथा तथा महिलाओं को शिक्षा का अधिकार जैसी कुरीतियां थीं, वहीं पर दूसरी ओर सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता का नितान्त अभाव था। समाज ऊंच-नीच तथा जातिवाद की संकुचित धाराओं में जकड़ा हुआ था। महर्षि ने इन समस्त कुरीतियों पर दृढ़ता से कुठाराघात किया। 'नारी नरकस्य द्वारम्' का ढोल पीटकर उनके लिए वेद का द्वार बन्द किया हुआ था तब स्वामी जी ने ***'यथेमां वाचं कल्याणीभावदानि जनेभ्यः'*** यजुर्वेद के इस मन्त्र की घोषणा करते हुए नारी को वेदाध्ययन का अधिकारी ठहराया।

सामाजिक दृष्टि से उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन किया, किन्तु वर्ण-व्यवस्था को गुण, कर्म तथा स्वभाव के अनुसार स्वीकार किया।

'जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्चयते। महर्षि ने यह स्पष्टीकरण किया कि वकील का बेटा जन्म से वकील नहीं होता, डाक्टर का बेटा जन्म से डाक्टर नहीं होता। इसी तरह कोई जन्म से ब्राह्मण नहीं होता, विद्याध्ययन, तपस्या, आदि से ब्राह्मण होता है। जाति के उपयोग व्यक्ति को प्रेरित करने के लिए होना चाहिए।

दयानन्द जी की विशेषता उनका राष्ट्रवाद है। वे व्यक्ति को केवल व्यक्तिगत जीवन की परिधि तक ही सीमित रखना नहीं चाहते थे। व्यक्ति समाज का अविच्छिन्न अंग है, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों अन्यान्याश्रित हैं। ये तीनों उनके मन में सदा एक साथ उपस्थित रहे। उन्होंने आर्यसमाज की जो स्थापना की, यह वेदवाद और राष्ट्रवाद आर्यसमाज को स्वामी जी से विरासत में मिला। स्वामी जी ने राष्ट्र का कल्याण करने के लिए अपने सारे सुख त्याग दिए। अपने देश की पराधीनता से गहरी मानसिक वेदना ऋषि को होती थी। उन्होंने स्वराज्य प्राप्त करने के लिए और राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत करने के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास किया। राष्ट्र की एकता अखण्डता की रक्षा के लिए जीवन भर लगे रहे। राष्ट्र की चेतना की अलख जगाई और देश को स्वाधीन बनाने का संकल्प लिया। महर्षि ने राजनीति में स्वराज्य का, संस्कृति में स्वभाषा का, धर्म में सर्व धर्म वेद का तथा अर्थनीति में स्वदेशी का समर्थन किया। प्रत्येक क्षेत्रा में स्व का समर्थन ही उनका राष्ट्रवाद है। इस प्रकार उन्होंने स्वाधीनता की नींव डाली।

जिस क्षेत्रा में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और आर्यसमाज की अत्याधिक देन है वह हिन्दी भाषा और साहित्य को उनका योगदान। गुजराती होने हुए भी उन्होंने हिन्दी में वेदभाष्य करके परमात्मा की अमरवाणी का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त ऋषि ने छोटे बड़े ग्रन्थ लिखे। अपने ग्रन्थों के द्वारा हिन्दी भाषा को दिशा दी तथा उसे राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ये तीनों ही ग्रन्थ विभिन्न दिशाओं में हमारे पथ प्रदर्शक हैं। इनमें ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका महर्षि की विद्वता तथा उनके वेद सम्बन्धी विचारों का प्रतिरूप है। संस्कार विधि मुख्य रूप से कर्मकाण्ड की परिचायक है। तथा सत्यार्थ प्रकाश - सत्य अर्थ का प्रकाश - इसके नाम से ही प्रतीत होता है कि यह ग्रन्थ स्वामी जी के चिन्तन और सुविस्तृत ज्ञान का प्रतिनिधि है। सत्यार्थ प्रकाश अद्वितीय ग्रन्थ है। सत्य अर्थ जो पाखण्ड में तिरोहित हो चुका था, उस पाखण्ड रूपी अंधकार को छिन्न-भिन्न करके सत्य के सूर्य का प्रकाश करना इस ग्रन्थ का उद्देश्य है। ईश्वर, धर्म, शिक्षा, राजनीति, समाजिक दुर्दशा, मोक्ष आदि सभी विषयों पर महर्षि ने इस ग्रन्थ में सत्य का प्रकाश डाला है।

स्वामी दयानन्द ने धर्म भ्रष्ट किए गए लोगों के लिए शुद्धि का कार्य किया। पश्चिमी सभ्यता में रंगे लोगों को भारतीय संस्कृति का पाठ पढ़ाया। उन्होंने दलिताद्धार, छुआछूत का खण्डन, धार्मिक सुधार, राजनैतिक सुधार, वृद्ध विवाह और सतीप्रथा का निवारण शिक्षा का प्रचार आदि सभी कार्यों के लिए अथक प्रयास किया।

इस अवसर पर दीपमालिका का पवित्र पर्व है। जहां अत्याचारी रावण को मारकर 14 वर्ष के वनवास के बाद श्रीराम के आगमन की प्रसन्नता में सामूहिक दीपमालिका और मनोरंजन का अवसर था। वहां इसी दिन वैदिक संस्कृति, स्वराज्य और मानवता के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस है। उनके लोकोत्तर चरित्र से हमें प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए कि व्यक्ति को अज्ञान, पराधीनता एवं विषमता के अन्याय-अत्याचार का उन्मूलन करने के लिए केवल प्रार्थना न कर स्वाबलम्बन एवं संगठन के लिए प्रयत्नशील हों। महर्षि ने निरन्तर पदयात्रा करके अपने समय में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई, मानव मात्रा की समुन्नति के लिए अपने प्रयत्नों से अभूतपूर्व सामाजिक सांस्कृतिक क्रान्ति की थी। उनका एकमात्र लक्ष्य था- लेखनी और वाणी द्वारा देश के प्राचीन गौरव की प्रतिष्ठा और देशोद्धार के द्वारा विश्व शान्ति करना चाहते थे। वे भारतीय संस्कृति और भारत की उदात्त परम्पराओं को देश देशान्तरों और द्वीप-द्वीपान्तरों में प्रचारित और प्रसारित करना चाहते थे। स्वामी जी के द्वारा प्रतिपादित आर्यसमाज के दस नियम किसी एक पथ के संस्थागत नियम न होकर मानवता के उत्थान, अभ्युदय और एकता के मार्गदर्शक सिद्धान्त हैं। वे राष्ट्र के आर्थिक निर्माण में गोरक्षा, स्वदेशी की महत्ता पर निरन्तर बल देते थे, स्त्रियों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्रामें उनकी गरिमा प्रतिष्ठित करना चाहते थे। दलितोद्धार को राष्ट्र के लिए संजीवनी समझते थे।

अपनी छोटी सी आयु में महर्षि जो कार्य कर गए, वह अपूर्व एवं अनुपम है। हर क्षेत्रा में उन्होंने जो कार्य किया, उससे देश में नया स्वाभिमान जागा, भारतीय राष्ट्रीयता के क्षेत्र में अपूर्व संघर्ष हुआ। स्वामी जी में क्षमा दान की भावना अद्भुत थी। मूर्तिपूजा का खण्डन करने पर एक साधु उनको प्रतिदिन दुर्वचन कहा करता था, उसे मीठों आमों को प्रदान करके सच्चे शिव का बोध कराया। उनके सिद्धान्तों का विरोध करने वाले विद्रोहियों ने स्वामी जी पर आघात करने के लिए उन पर जिन्दा सर्प फेंके। उनको कई बार विष पिलाया गया। उन्होंने अपने योग बल से इनका निराकरण किया, परन्तु अन्त में अपने रसोइए जगन्नाथ जैसे पापी द्वारा उनकी जीवन लीला समाप्त हुई। महर्षि के निर्वाण को 130 वर्ष के लगभग हो रहे हैं, ऐसे में जहां हम उनके व्यक्तित्व के प्रति अपने श्रद्धासुमन प्रस्तुत करें वहां हमें इस अवसर पर यह मूल्यांकन भी करना होगा कि उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज के सवा सौ से अधिक वर्षों में क्या समाज उतना खरा यशस्वी रहा है जिसका महर्षि ने सपना संजोया था। स्वाधीनता संग्राम में और भारतीय पुनर्जागरण के शैक्षणिक, सामाजिक कार्यों और आर्यजनों की यशस्विनी भूमिका रही है। परन्तु देश की जो वर्तमान दुरावस्था है, देश में जिस प्रकार का भ्रष्टाचार, स्वार्थों से परिपूर्ण राजनीति है, उसे देखते हुए आज आवश्यकता है आर्यसमाज और आर्यजन अपनी वही तेजस्विनी और स्वार्थहीन खरी भूमिका प्रस्तुत करें, जैसी उन्होंने महर्षि के अवसान के बाद के पहले 50 वर्षों में प्रस्तुत की थी। अन्त में हमें यह स्मरण रखना है :- *एक दीपक बुझ गया लाखों दीपक जलाकर।*

– ***डॉ. सुमेधा विद्यालंकार***
बी- 22, गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली- 49

निर्वाणोत्सव पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के श्रीचरणों में समर्पित

ओ३म् जप बन्दे सिखाया ऋषी ने

ओ३म् जप बन्दे सिखाया था ऋषी ने।
ज्ञान का दीपक जलाया था ऋषी ने।।
अंधविश्वासों का डेरा,
सो रहा था देश मेरा
था नहीं दिखता सवेरा
दूर तक फैला अंधेरा,
वेद-सूरज से भगाया था ऋषी ने।
ओ३म् जप बन्दे सिखाया था ऋषी ने।
दुर्गणों ने देश घेरा,
मत-मतान्तर का बसेरा,
मत-विद्या लुप्त-सी थी,
सत्य कोहरे में घनेरा,
चीर कोहरा सत्य दिखलाया ऋषी ने।
ओ३म् जप बन्दे सिखाया था ऋषी ने।
दुर्दशा थी नदियों की,
वेद पढ़ने की मनाही,
जाति-बंधन की वजह से,
हिन्दुओं की थी तबाही,
गुण-करम से जाति, बतलाया ऋषी ने।
ओ३म् जप बन्दे सिखाया था ऋषी ने।
यज्ञ-संस्कृति से जुड़ो तुम,
भोग लिप्सा से हटो तुम,
स्वप्न अपने राज्य का हो,
वेद-मन्त्रों को पढ़ो तुम,
सत्यविद्या वेद में यह तथ्य समझाया ऋषी ने।
ओ३म् जप बन्दे सिखाया था ऋषी ने।

-प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया, डी.लिट्.
बी-3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

छठा आर्य परिवार विवाह योग्य परिचय सम्मेलन इन्दौर में तो 7वां सम्मेलन दिल्ली में आयोजित होगा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आरम्भ किए गए परिचय सम्मेलनों की शृंखला में 26 अक्तूबर को छठे-सातवें सम्मेलन की घोषणा की गई। इस अवसर पर अब तक के सम्मेलनों की मीडिया एलबम का विमोचन आचार्य सत्यानन्द वेद वागीश ने किया गया। **6वां सम्मेलन 19 जनवरी, को इन्दौर** में तथा **7वां सम्मेलन 2 फरवरी, 14 को दिल्ली** में आयोजित होगा। पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं तथा हमारी वैबसाइट **www.thearyasamaj.org** से भी डाउनलॉड किए जा सकते हैं।

'पुस्तकों से दोस्ती'

आर्यसमाज की सबसे मूल्यवान धरोहर अगर कोई है तो वह है उसका साहित्य। आर्यसमाज से सम्बन्धित साहित्य का परिचय आज की युवा पीढ़ी को अवगत करवाना हमारी जिम्मेदारी बनती हैं। इस भाव से आर्यसन्देश में हर सप्ताह एक पुस्तक का संक्षिप्त परिचय छापा जायेगा, जिससे उस पुस्तक से युवा पीढ़ी परिचित हो सके।- ***विनय आर्य***

कल्याण मार्ग के पथिक - स्वामी श्रद्धानन्द

मेरे पिता- लेखक इन्द्र विद्या वाचस्पति

अंग्रेजी पठित किसी भी युवक को आर्य समाज के महान धरोहरो से परिचित करवाने के लिये सबसे उत्तम पुस्तक MAKERS OF ARYASAMAJ है। D.C.SHARMA द्वारा लिखित इस पुस्तक का नवीन संस्करण हाल ही में प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक में स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पण्डित लेखराम, पण्डित गुरुदत्त एवं महात्मा हंसराज जी के जीवन का संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक में दिया गया है। मेरे विचार से किसी भी नवयुवक को भेंट करने के लिए यह सबसे उत्तम पुस्तक है जिससे आर्यसमाज की महान हस्तियों का परिचय हो सके।

प्रकाशक- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली, 011-23977216, 65360255 - ***डॉ. विवेक आर्य, समीक्षक***

मॉरीशस में आर्यसमाज की स्थापना के शती वर्ष के अवसर पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मॉरीशस

5 से 8 दिसम्बर, 2013

स्थान : श्रीमती एल. पी. गोविनरामेन वैदिक केन्द्र युन्यन वेल, त्रुआ बुतिक

विषय : भारतेतर देशों में भारतीय धर्मोपदेशकों का आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार में योगदान। **विशिष्ट अतिथि : डॉ. रामप्रकाश (सासंद)**

सम्मेलन में जाने के इच्छुक आर्यजन अपना पंजीकरण कराएं

पंजीकरण फार्म WWW.THEARYASAMAJ.ORG ;

WWW.ARYASABHAMAURITITUS.MU पर उपलब्ध है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

हरिदेव रामधनी, महामन्त्री

आर्य सभा मॉरीशस, E-MAIL: ARYAMU@INTNET.MU

अन्तर गुरुकुलीय संस्कृत व्याकरण प्रतियोगिता

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्रीमद् दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं श्री रामकृष्ण गोशाला खेड़ा खुर्द दिल्ली-82 में अखिल भारतीय अन्तर गुरुकुलीय संस्कृत व्याकरण प्रतियोगिता (अष्टाध्यायी कण्ठस्थीकरण, प्रथमावृति, धातुवृति एवं काशिका) आगामी 27 व 28 दिसम्बर 2013 को आयोजित की जा रही है। इच्छुक छात्र सम्पर्क करें। विस्तृत नियमावली शीघ्र भेजी जाएगी।

- ***आचार्य सुधांशु (9350538952***

शुद्धि संस्कार कराकर पुनः वैदिक (हिन्दू) धर्म अपनाया

जहाँ एक और दलित वर्ग के लोगों को सामूहिक रुप से ईसाई मिशनरियां जल संस्कार का नाम देकर उन्हें ईसाई मत की गति विधियां बता रही है वहीं शुद्धि के प्रचारक प्रणवमिश्र भी उन्हीं में घुसकर वैदिक धर्म का पाठ पढ़ाकर उन्हें धर्म की राह दिखा रहे हैं।

सन् 1998 में राजपुर कलां (अलीगंज) बरेली गांव के कुछ लोगों को बहका कर ईसाई मत ग्रहण कराने वाले पादरी महेन्द्र जो ईसा गढ़ में अपनी पत्नी के साथ प्रचारक बनकर ग्राम में और यहाँ पूरे मुहल्ले को ईसाईयत की गर्त में धकेल दिया पुनः चर्च भी मिशनरियों के माध्यम से बना और ईसाई मत के प्रचार के केन्द्र रुप बनकर पादरी महेन्द्र आस-पास के ग्रामों में प्रचार करने लगे इस कार्य की भनक शुद्धि सभ के प्रचारक प्रणव शास्त्री को वर्ष 2011 में लगी उसके बाद पादरी महेन्द्र को शास्त्रार्थ के लिए चैलेन्ज किया उनसे शास्त्रार्थ किया बाइबिल से ही प्रणव शास्त्री ने प्रमाण दिये फिर अपने सम्पर्क में लेते हुए कई बार वहां जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया जिसके चलते ग्राम के सभी ईसाई परिवारों ने 28 अप्रैल 2013 को यज्ञ में आहुति देकर चर्च के समक्ष खड़े होकर संकल्प लिया कि भविष्य में ईसाई (विदेशी) मत का बहिष्कार करेंगे एवं ऋषि-मुनियों के बताए रास्ते पर चलकर अपना जीवन सफल बनायेंगे।

इस कार्यक्रम में इन्द्रमुनि आर्य द्वारा प्रवचन दिये गये प्रणव शास्त्री ने पुरोहित कार्य किया गया एवं उपदेश दिया। इस अवसर पर पुस्तु लाल, विजेन्द्र, अजय जी, रामलाल, किशोर, कविता आदि के साथ 61 लोगों ने ईसाई मत त्याग वैदिक धर्म अपनाया। - **साभार-**

शुद्धि समाचार (अक्तूबर, 2013)

योग, व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

गुरुकुल आश्रम आमसेना के तत्त्वावधान में छ.गढ़ के महासमुन्द जिलान्तर्गत ग्राम देवरी के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पंचदिवसीय 10 से 14 सितम्बर तक योग, व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 600 बालक- बालिकाओं को योग, आसन, प्राणायाम, जूडो, कराटे, कुंगफू, तलवार बाजी, लाठी चालन, दण्ड-बैठक, सूर्यनमस्कार, भूमि नमस्कार आदि आत्मरक्षा के गुर सिखाये गये।

इस शिविर का समापन समारोह 14 सितम्बर को माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में रखा गया जिसमें प्रदेश के राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष श्री सतीश जग्गी सहित अनेक गणमान्य सज्जन तथा गुरुकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक एवं संचालक स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती उपस्थित थे।

- ***आचार्य रणजीत 'विविस्तु'***

पृष्ठ 3 का शेष

जुगाड़ एक अदद पीएच.डी का

सड़क पर पीएच. डी. जा रहा है। लेकिन समाज में सब आप जैसे सज्जन नहीं होते, बहुत से सिर-फिरे लोग भी होते हैं जो किसी बात को सहज रूप से स्वीकार नहीं करते।

ऐसे ही एक सिर-फिरे ने मुझ में पूछ ही लिया : आपकी पीएच. डी. का विषय क्या था?

-मैं एक शरीफ आदमी हूँ विषयों से दूर रहता हूँ।

-आप कभी पढ़ते-लिखते तो दिखाई नहीं दिए, फिर आपको यह डिग्री कैसे मिल गई?

- मैं जन-सेवा करता हूँ। सेवा ही सब से बड़ी पढ़ाई-लिखाई है। इसीलिए तो शास्त्रों में कहा गया है:-'सेवा परमो धर्मः'। मेरी डिग्री उसी सेवा का प्रतिफल है। उसने पूछा - आपको डिग्री किसने दी? मैंने कहा- हंसों के भी हंस स्वनाम धन्य महाराज परमहंस जी ने।

- पर उन्होंने आज तक तो कभी कोई डिग्री दी नहीं।

- शायद उनका डिग्री विभाग हाल ही में खुला है।

- पर बंधु! वे तो दसवीं का सर्टीफिकेट भी नहीं दे सकते!

- अभी सर्टिफिकेटों की मांग नहीं है। हो सकता है मांग होने पर यह विभाग भी शुरू कर दिया जाए।

- मेरा मतलब है जब वे डिग्री दे ही नहीं सकते तो आपको कैसे दे दी?

- मुझे पेड़ गिनने से नहीं आम खाने से मतलब है। कैसे देते हैं, कहाँ से देते है, यह जिरह उन्हीं से कीजिए। मैंने डिग्री ली है दी नहीं।

वह सही अर्थ में सिर-फिरा निकला। वह अपने सवाल लेकर परमहंस जी के पास पहुँच गया। हालांकि परमहंस जी उसे यह जानकारी देने को बाध्य नहीं थे क्योंकि परमहंस जी और उनकी संस्था सूचना के अधिकार के दायरे में नहीं आते थे। इसके बावजूद दयालु-स्वभाव परमहंस जी ने उनको उत्तर दे दिया। जो सवाल किए गए और जो उत्तर दिए गए वे भी उस सिर-फिरे के सौजन्य से नीचे दर्ज किए जा रहे है :

-क्या आप पीएच. डी. की डिग्री दे सकते हैं?

- बिल्कुल नहीं। मैं वही दे सकता हूँ जो मेरा है और जिस पर मेरा अधिकार है।

- अगर नहीं तो फिर आपने **डबास** को डिग्री कैसे दे दी?

- मैंने कोई डिग्री नहीं दी। मैं तो अपने सेवकों को अपने स्नेह, करुणा तथा आशीर्वाद का दान देता हूँ। मैं जो दान देता हूँ वह **परम हंस दान** कहलाता है।

- लेकिन वह तो कहता है उसे पीएच. डी. मिली है।

- परमहंस दान (Param Hans Dan) का ही संक्षिप्त रूप पी. एच. डी. है।

- लेकिन वह तो अपने नाम के साथ डाक्टर लगाता है।

- वह क्या लगाता है और क्या नहीं लगाता इसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं है। यह फालतू का सवाल उसी से जाकर पूछ। - **एम-93 साकेत, नई दिल्ली-110017**

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) को निम्न पदों के लिए आवश्यकता है-

1. हिन्दी प्रूफ रीडर जो प्रूफ रीडिंग के साथ-साथ सम्पादन कार्य में भी रूचि रखते हों। हिन्दी-अंगेजी दोनों की योग्यता वालों को प्राथमिकता।

2. साहित्य प्रचारक जो विभिन्न पुस्तक मेलों में जाकर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार कर सकें एवं स्टाल पर आने वाले जिज्ञासु को सन्तुष्ट कर सकें।

3. सेल्समैन - जो सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य को जहां-तहां विक्रय कर सके तथा विक्रय हेतु आर्डर ला सके।

सभी पदों के लिए गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। सभी पद पूर्णकालिक हैं। सम्बन्धित क्षेत्र से सेवानिवृत्त भी आवेदन कर सकते हैं। इच्छुक आवेदक अपना बायोडाटा निम्न पते पर भेजें/ ईमेल करें।

महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 9958174441
Email:aryasabha@yahoo.com

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज कैराना, जिला शामली (उ.प्र.) को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। निःशुल्क आवास व्यवस्था के साथ योग्यतानुसार वेतन भी दिया जाएगा। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें-

मन्त्री, आर्यसमाज कैराना
जनपद- शामली - 247774 (उ.प्र.)
मो. 09837773024 (विजेन्द्र आर्य)

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज मोहन गार्डन
नई दिल्ली-110059

प्रधान : श्री देवकीनन्दन गुप्ता
मन्त्री : श्री धर्मवीर आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री कौशलेश लोधी

91वां वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज 15 हनुमान रोड़ नई दिल्ली का 91वाँ वार्षिकोत्सव ऋग्वेदीय पारायण यज्ञ के साथ दिनांक 15 से 20 अक्तूबर 2013 तक आचार्य धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। ऋत्विक डा. कर्णदेव शास्त्री थे। वेदपाठ गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के ब्रह्मचारियों द्वारा किया जाता रहा। भजन श्रीमती सुदेश आर्या के हुए। वेद क्यों पढने चाहिए? ईश्वर की उपासना कब-क्यों-कैसे करनी चाहिए? हमारा गृहस्थ सुखी कैसे रहे तथा सन्तान का चरित्र निर्माण कैसे हो आदि विषयों पर डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी के सारगर्भित प्रवचन हुए।15 अक्टूबर को स्त्री समाज का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 19 अक्टूबर को रत्नलाल सहदेव स्मारक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय था- वैदिक धर्म की विशेषताएं। प्रथम स्थान डी.ए.वी. स्कूल रोहिणी के अभिषेक, द्वितीय स्थान कन्या गुरुकुल नरेला की छात्रा कु. अनु एवं तृतीय स्थान कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की छात्रा कुमारी राधिका ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता की अध्यक्षता डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने की। 20 अक्टूबर को पांच कुण्डीय यज्ञों के साथ पूर्णाहुति हुई। तदुपरान्त श्री अशोक उकरानी ने सामाजिक उत्थान में आर्यसमाज की भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया।

डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने मानव निमार्ण की रुपरेखा पर महर्षि दयानन्द एवं वेदानुसार मानव का निर्माण हो विषय पर विचार व्यक्त किए। तदुपरान्त इसके बाद आचार्य अखिलेश भारती जी ने ईश्वर की उपासना क्यों करनी चाहिए विषय पर प्रभावशाली प्रवचन दिया।

इस अवसर पर पंचमहायज्ञवाणी पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

- अरुण प्रकाश वर्मा, मन्त्री

36वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में वेद कथा

दिनांक : 11 से 16 नवम्बर, 2013
यज्ञ : प्रात: 7:15 से 8:30 बजे
ब्रह्मा : स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती
भजन : श्री कलदीप आर्य
वेद कथा : सायं 7 से 8 बजे
पूर्णाहुति एवं समापन : 17 नवम्बर
स्थान : आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2,न.दि.

-सहदेव नांगिया, मन्त्री

आर्यसमाज मस्जिद मोठ न.दि. का 106वां वार्षिकोत्सव एवं 130वां निर्वाणोत्सव

10 नवम्बर, 2013 (रविवार)
यज्ञ : प्रात: 8 बजे से 9:30 बजे
ब्रह्मा : डॉ. जयेन्द्र कुमार (गुरुकुल नोएडा)
भजन : श्रीमती सुदेश आर्या
मुख्य अतिथि : महाशय धर्मपाल
वक्ता : डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. सुधीर कुमार, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम एवं श्री विजय गुप्त
अध्यक्षता : श्री इन्द्रसेन साहनी

-चतर सिंह नागर, मन्त्री

आवश्यकता है

आर्यसमाज के धार्मिक कार्यक्रमों को टी.वी. पर प्रसारित करने हेतु **प्रबन्धक** की आवश्यकता है।

इसी के साथ सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए **उपदेशक, प्रचारक एवं भजनोपदेशकों** की की भी आवश्यकता है। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
Email:aryasabha@yahoo.com

भूल सुधार : आर्य सन्देश के गत अंक 21 से 27 अक्तूबर, में प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित लेख में भूलवश महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी का जन्म 1827 ई. प्रकाशित हो गया। कृपय इसे सुधारकर 1824 ई. पढ़ा जाए। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - सम्पादक

आर्यसमाज देवनगर नई दिल्ली का 53वां वार्षिकोत्सव समारोह

दिनांक : 7 से 10 नवम्बर, 2013
यजुर्वेद यज्ञ : प्रात: 7:30 से 9:30 बजे
ब्रह्मा : डॉ. कैलाश शास्त्री
भजन : पं. अंकित शास्त्री
बच्चों की प्रतियोगिताएं - 8-9 नवम्बर

-अशोक मिश्रा, मन्त्री

आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लाक हरिनगर, नई दिल्ली का 38वां वार्षिकोत्सव

दिनांक : 13 से 17 नवम्बर, 2013
यज्ञ : प्रात: 6:30 से 8:30 बजे
ब्रह्मा : आचार्य कुंवरपाल शास्त्री
प्रवचन : आचार्य हरि प्रसाद
भजन : पं. अंकित शास्त्री
आर्य महिला सम्मेलन : 13 नवम्बर
बाल-बालिका प्रतियोगिता : 15 नवम्बर
समापन एवं आर्य सम्मेलन : 17 नवम्बर

-महेन्द्र सिंह, मन्त्री

धार्मिक एवं वैज्ञानिक जगत का अभूतपूर्व आयोजन

ईश्वर-तत्व-विज्ञान शिविर

दिनांक : 11-12-13 नवम्बर, 2013
यज्ञ : प्रात: 8:30 से 10:00 बजे
शिविर : प्रात: 10 से सायं 5 बजे
विषय : ईश्वर की सत्ता की वैज्ञानिकता का प्रतिपादन करके विश्व प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री स्टीफन हॉकिंग्स के अनीश्वरवाद एवं सृष्टि उत्पत्ति सिद्धान्त की समीक्षा करना। 2. ईश्वर के स्वरूप की वैज्ञानिकता का प्रतिपादन। 3. मांसाहार व मदिरापान की अवैज्ञानिकता, मांसाहार एवं हिंसा का प्राकृतिक प्रकोपों से सम्बन्ध। 4. धर्म का यथार्थ स्वरूप।

स्थान : श्री वैदिक स्वस्ति पंथा न्यास
भागलभीम, भीनमाल, जिला- जालौर
राजस्थान - 343029

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

आर्यसमाज गांधीधाम (गुजरात) में दिव्य वैदिक सत्संग समारोह

दिनांक :13 दिसम्बर से 15 दिसम्बर, 13 आमन्त्रित विद्वान : आचार्या नन्दिता शास्त्री पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, पं. सत्यानन्द वेदवागीश। कार्यक्रम प्रात: 8 से रात्रि 8:30 बजे तक चलेंगे।

-वाचोनिधि आर्य, मन्त्री
मो.09428006232

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

आर्यसमाज मारतहल्लि, बेंगलोर ने अपनी स्थापना के मात्र 5 वर्ष बाद सुदूर दक्षिण भारत के केरल प्रान्त में श्री के. एम. राजन जी के नेतृत्व में एक नवीन आर्यसमाज की स्थापना कर एक और कीर्तिमान स्थापित किया केरल में "आर्यसमाज बेल्लीनैजी जिला पालक्काड की स्थापना ओणम् के शुभ अवसर शनिवार 14 सितम्बर 2013 को स्वामी आर्य वेशजी द्वारा वैदिक ध्वजारोहण एवं दीप प्रज्वलित कर की गई। बेंगलूरु के श्री एस.पी. कुमार (फकीरे दयानन्द) ने इस विशेष कार्यक्रम का आयोजन एवं संचालन किया। स्थानीय जनता के साथ-साथ आर्यसमाज मारतहल्लि के सचिव श्री अरुण कुमार त्रिवेदी, श्री सुधाकर गुप्ता श्री अशोक महाजन, श्री गुलाब चन्द आर्य, सुश्री भारती श्रीवावास्तव उपस्थित थे।

आर्यसमाज सिविल लाइन्स (अलीगढ़) का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सिविल लाइन्स अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव 12 से 15 अक्तूबर तक सम्पन्न हो गया। यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद मध्य प्रदेश के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी प्रमुख वक्ता के रूप में आमन्त्रित थे। जिन्होंने ८ सत्रों में चुने हुए वेद मन्त्रों, नीतिसूत्रों के आधार पर वैदिक सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या की। आचार्य आनन्द जी के आह्वान पर अन्तिम दिन २१ यज्ञ वेदियों पर ६१ यजमान दम्पतियों नेश्रद्धा पूर्वक भाग लिया। आचार्य स्वदेश जी ने संगठन शक्ति व ईश्वर विश्वास को लेकर ओजस्वी व्याख्यान दिए। अलीगढ़ जनपद के आर्यजन गुरुकुल साधू आश्रम, नगर व ग्रामीण अंचल के सभी आर्यसमाजों से आये थे। श्री चेतनदेव वैश्वानर, आचार्य बुद्धदेव जी, श्री जीवन सिंह, डा जय सिंह सरोज जी उत्तराखंड देव नारायण भारद्वाज सहित अनेक विद्वानों का सान्निध्य जनता को मिला। दिल्ली की श्रीमती कविता रानी जी व एटा के श्री शिवपाल आर्य जी के मधुर भजनोपदेश सभी सत्रों में प्रभावोत्पादक रहे। आर्यवीर दल के श्री पंकज आर्य व उनकी टीम तथा स्त्री आर्य समाज की बहनों ने पूरा साथ दिया अत: इनका विशेष योगदान कहा जा सकता है। अंत में समाज के डॉ. पपेन्द्र जी ने सभी का धन्यवाद किया।

- मन्त्री

भगत सिंह जयन्ती मनाई

आर्यसमाज रामपुरा कोटा द्वारा संचालित मातृ सेवा सदन एवं बाल भारती आर्य शिशुशाला बालिका विद्यालय में 28 सितम्बर को क्रान्तिकारी भगत सिंह जयन्ती बडी धूम धाम से मनाई गई। इस अवसर पर आर्य समाज के मन्त्री एवं मातृ सेवा सदन बालिका विद्यालय के व्यावस्थपक डी.पी. मिश्रा ने सैकड़ों छात्र/छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि शहीद भगत सिंह ने स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर अपना सारा जीवन देश की आजादी में लगा दिया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश को कई बार पढ़ा और अंग्रेजों को भगाने का संकल्प लिया। वह 14 वर्ष की आयु में राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ गए।

आर्य परिवार संस्था के मन्त्री श्री इन्द्र कुमार सक्सेना, पूर्णिमा सत्संग समिति के प्रधान श्री राजेन्द्र सक्सेना, आर्य समाज भीमगंज मण्डी के पूर्व मन्त्री श्री राजेन्द्र आर्य ने भी भगत सिंह के जीवन से जुड़ी कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं को सुनाया एवम् विद्यालय के छात्रों ने भगत सिंह के जीवन पर नाट्य रुपान्तरण भी प्रस्तुत किया जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

- प्रधान

परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के 130वें बलिदान पर

ऋषि मेला : 8, 9, 10 नवम्बर, 2013

आयोजन स्थल : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।
निवेदक : परोपकारिणी सभा, अजमेर (राज.)

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 28 अक्तूबर, 2013 से रविवार 3 नवम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 31 अक्तूबर/1 नवम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 अक्तूबर, 2013

सदियों की परम्परा एवं विश्वास

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

गुणों से भरपूर

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

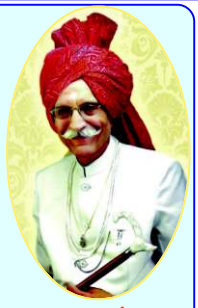

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

प्राकृतिक आयुर्वेदिक उदत्पाद : गुरुकुल चाय, पायोकिल, आंवला रस, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु, ब्राह्मी रसायन, शिलाजीत

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

प्राप्ति स्थान — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2014

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव (दीपावली) तक आर्डर बुक कराने पर 10% की विशेष छूट

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339

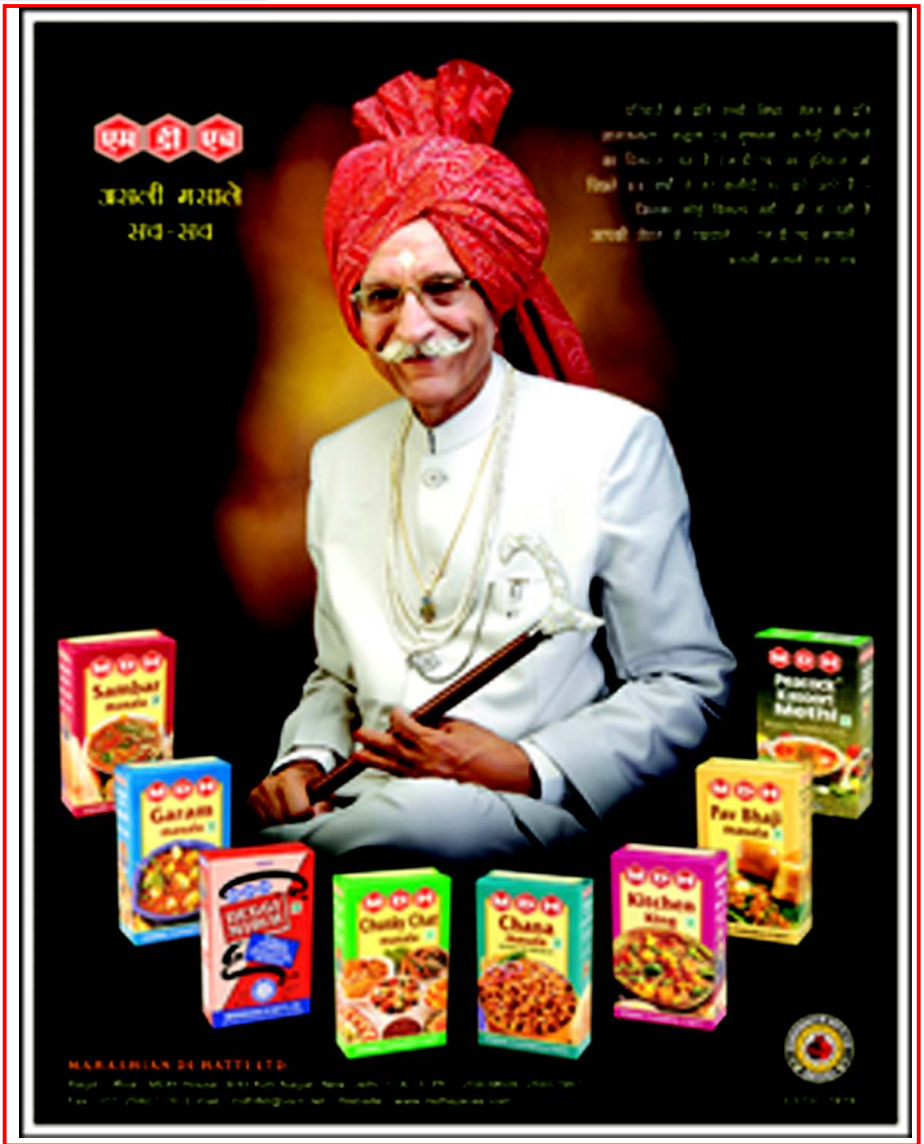

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह

Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/– रु.

हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर